

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2025 with Solution PDF-Set 2/1/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. है दीप एक पर मोल सूर्य से भी भारी
 है व्यक्ति एक वर्तिका, दीप धरती सारी
 देखो न दुखी हो व्यक्ति, उठे इंसानी लौ,
 वनखंड जलाती सिर्फ एक ही चिनगारी।
 है झंझापथ, पद आहत, दीपक मद्धिम है
 संघर्ष, रातकाली, मंजिल पर रिमझिम है
 लेकिन पुकारता आ पहुँचा युग इंसानी
 दो कदम रह गया स्वर्ग चढ़ाई अन्तिम है।
 दीपक, तेरे नीचे घिर रहा अँधेरा है
 सोने की चमक तले अनीति का डेरा है
 तू इंसानी जीवन की रात मिटा, वरना
 इंसान स्वयं बनकर आ रहा सवेरा है।

[8 अंक]

1(i). 'है दीप एक सूर्य से भी भारी' – पंक्ति का आशय है –

[1 अंक]

- (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।
 (B) अकेला दीपक सूर्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश प्रदान करने में सक्षम है।
 (C) एक अकेला प्रकाश का स्रोत सूर्य से अधिक मूल्यवान है।
 (D) दीपक सूर्य की ऊर्जा से अधिक ऊर्जा अपने भीतर रखता है।

सही उत्तर: (A) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।

हल:

अवधारणा:

- कविता में दीप व्यक्ति की चेतना और संघर्षशील शक्ति का प्रतीक है।
- प्रतीक का अर्थ पूरे पद्यांश के सामाजिक संदर्भ में ग्रहण किया जाता है।

चरण 1: प्रतीक का आशय पहचानें कवि व्यक्ति को वर्तिका कहता है और उसकी इंसानी लौ उठने का आह्वान करता है। सूर्य से अधिक मूल्य होने का अर्थ प्रकाश या ऊर्जा की भौतिक तुलना नहीं, बल्कि अकेले व्यक्ति की अपार मानवीय और परिवर्तनकारी शक्ति है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें (A) शोषित व्यक्ति की सामर्थ्य को शोषक व्यवस्था के सामने रखता है, इसलिए संदर्भानुकूल है। (B) में वास्तविक प्रकाश की मात्रा, (C) में केवल प्रकाश के स्रोत का मूल्य और (D) में भौतिक ऊर्जा की तुलना है। ये तीनों विकल्प कविता के सामाजिक आशय को नहीं व्यक्त करते।

चरण 3: निष्कर्ष अकेला शोषित व्यक्ति भी संपूर्ण शोषक वर्ग से अधिक शक्तिशाली हो सकता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: दीप और सूर्य की तुलना को भौतिक प्रकाश से नहीं, व्यक्ति की मानवीय शक्ति से जोड़कर पढ़ें।

1(ii). 'इंसानी जीवन की रात मिटा' – से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

- (A) शोषित वर्ग के जीवन से रात्रि को दूर करना
(B) शोषित वर्ग के घरों को प्रकाशित करना
(C) इंसानों के जीवन से अंधकार को दूर करना
(D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

सही उत्तर: (D) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

हल:

अवधारणा:

- कविता में रात अभाव, शोषण और अन्याय की प्रतीक है।
- शब्दों का आशय निकटवर्ती पंक्तियों और पूरे कथ्य से स्पष्ट होता है।

चरण 1: संदर्भ से अर्थ निकालें इस पंक्ति से पहले सोने की चमक के नीचे अनीति का डेरा होने की बात कही गई है। इसलिए जीवन की रात केवल सूरज डूबने पर होने वाला अँधेरा नहीं है। यह शोषित मनुष्यों के दुख, अभाव और अधिकारहीनता की दशा है।

चरण 2: सभी विकल्पों में अंतर करें (A) रात्रि को सचमुच दूर करने और (B) केवल घरों को रोशन करने की बात करता है। दोनों अर्थ बहुत संकीर्ण हैं। (C) में अंधकार हटाने का सामान्य कथन है, पर सामाजिक आशय स्पष्ट नहीं होता। (D) अभाव मिटाने और अधिकार देने की बात कहता है, जो अनीति दूर करने के कथ्य से सीधे जुड़ती है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषित वर्ग के अभाव दूर करके उसे उसके अधिकार देना ही इंसानी जीवन की रात मिटाना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: अनीति और सोने की चमक वाली पंक्ति देखकर रात का सामाजिक अर्थ निर्धारित करें।

1(iii). कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कॉलम-1	कॉलम-2
(क) मद्धिम दीपक	(1) लक्ष्य प्राप्ति के सीमित साधन
(ख) झंझापथ	(2) विपरीत परिस्थितियाँ
(ग) आहत पद	(3) घायल अंग

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) क-2, ख-3, ग-1
(B) क-1, ख-2, ग-3
(C) क-3, ख-1, ग-2
(D) क-1, ख-3, ग-2

सही उत्तर: (B) क-1, ख-2, ग-3

हल:

अवधारणा:

- काव्य के प्रतीक अपने संदर्भ के अनुसार विशेष अर्थ देते हैं।
- सुमेलन में प्रत्येक शब्द का अर्थ अलग जाँचकर पूरी शृंखला चुनी जाती है।

चरण 1: तीनों पदों का अर्थ समझें मद्धिम दीपक की लौ कम है, इसलिए वह लक्ष्य तक पहुँचने के सीमित साधनों का संकेत देता है: क-1। झंझापथ अर्थात् आँधी और बाधाओं से भरा रास्ता विपरीत परिस्थितियों का प्रतीक है: ख-2। आहत पद का सीधा अर्थ घायल पैर है, जो घायल अंग से मेल खाता है: ग-3।

चरण 2: दिए गए क्रमों को परखें (B) में क-1, ख-2, ग-3 तीनों संबंध सही हैं। (A) में तीनों संबंध बदल जाते हैं। (C) दीपक को घायल अंग और झंझापथ को सीमित साधन से जोड़ता है। (D) में क का मेल सही है, लेकिन ख और ग के अर्थ आपस में बदल दिए गए हैं। इसलिए केवल पहला संबंध देखकर विकल्प चुनना उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन क-1, ख-2, ग-3 है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले आहत पद का सीधा अर्थ घायल पैर पहचानें, फिर शेष दोनों प्रतीकों का मिलान करें।

1(iv). 'इंसान स्वयं सवेरे का रूप धारण कर आ रहा है' - पंक्ति के माध्यम से किसे क्या चेतावनी दी गई है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सवेरा आशा, जागरण और अन्याय के अंत का प्रतीक है।
- चेतावनी का लक्ष्य पहचानने के लिए सोने की चमक और अनीति का संदर्भ देखना चाहिए।

चरण 1: चेतावनी पाने वाले को पहचानें कवि सोने की चमक के नीचे अनीति का डेरा बताता है। यहाँ चेतावनी धन और सत्ता के बल पर दूसरों का शोषण करने वाले शक्तिशाली वर्ग को दी गई है। उनसे कहा गया है कि वे इंसानी जीवन की रात अर्थात् अभाव और अन्याय समाप्त करें।

चरण 2: चेतावनी का परिणाम स्पष्ट करें यदि शोषक वर्ग मनुष्यों के दुख दूर नहीं करेगा, तो पीड़ित मनुष्य स्वयं जाग्रत होकर संघर्ष करेंगे। सवेरा बनकर आने का अर्थ है कि वे अपनी सामूहिक शक्ति से शोषण का अंधकार मिटाएँगे और न्यायपूर्ण जीवन का मार्ग बनाएँगे। यह केवल सुबह आने की सूचना नहीं, परिवर्तन की चेतावनी है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषक वर्ग को चेतावनी है कि वह अन्याय और अभाव मिटाए, अन्यथा जाग्रत जनता स्वयं संघर्ष करके शोषण की व्यवस्था समाप्त कर देगी।

त्वरित सुझाव: चेतावनी में किसे संबोधित किया गया है और न मानने पर क्या होगा, दोनों बातें अवश्य लिखें।

1(v). 'वनखंड जलाती है एक चिनगारी' – पंक्ति से क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चिनगारी छोटे आरंभ और जाग्रत चेतना का प्रतीक है।
- वनखंड का जलना छोटे प्रयत्न के व्यापक परिवर्तन में बदलने का संकेत है।

चरण 1: उपमान का संबंध समझें एक छोटी चिनगारी विशाल वनखंड में आग फैला सकती है। कवि इसी बिंब से व्यक्ति की शक्ति समझाता है। व्यक्ति अकेला होने पर भी तुच्छ या असहाय नहीं है। उसके भीतर जागी साहस, आत्मविश्वास और मानवीय चेतना की लौ बहुत बड़े परिवर्तन की शुरुआत कर सकती है। पद्यांश में व्यक्ति को दुखी न होने और इंसानी लौ उठाने का आह्वान इसी विश्वास को दृढ़ करता है।

चरण 2: सामाजिक आशय स्पष्ट करें कविता के शोषण और अनीति वाले संदर्भ में यह चिनगारी अन्याय के विरुद्ध उठी आवाज है। एक जाग्रत व्यक्ति का प्रतिरोध दूसरों को प्रेरित करता है और व्यापक जनचेतना का रूप ले सकता है। इसलिए साधन कम होने या अकेले पड़ जाने पर निराश होना उचित नहीं है। आशय जंगल जलाने का समर्थन नहीं, बल्कि छोटे आरंभ में निहित विशाल परिवर्तनकारी सामर्थ्य को पहचानना है।

चरण 3: निष्कर्ष जैसे एक चिनगारी विशाल वन को जला सकती है, वैसे ही एक साहसी, जाग्रत व्यक्ति अन्याय के विरुद्ध व्यापक परिवर्तन की शुरुआत कर सकता है।

त्वरित सुझाव: चिनगारी और वनखंड के आकार का अंतर व्यक्ति की छोटी शुरुआत और बड़े प्रभाव से जोड़ें।

1(vi). 'इंसानी युग आने और स्वर्ग के दो कदम दूर रह जाने' – से क्या आशय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंसानी युग मानवता, समानता और न्याय की प्रतिष्ठा का संकेत है।
- स्वर्ग यहाँ धरती पर सुखमय और शोषणमुक्त जीवन का प्रतीक है।

चरण 1: इंसानी युग का अर्थ खोलें कवि संघर्ष, घायल पैरों और मद्धिम दीपक का उल्लेख करके कठिन यात्रा का चित्र देता है। इसके बाद इंसानी युग की पुकार यह बताती है कि मनुष्य की चेतना जाग रही है और शोषण का विरोध बढ़ रहा है। ऐसा समय निकट है जब धन और सत्ता के स्थान पर मानवीय गरिमा, अधिकार और समानता को महत्व मिलेगा। यह किसी अलौकिक युग का वर्णन नहीं, मानवीय समाज की आशा है।

चरण 2: दो कदम दूर स्वर्ग का आशय समझें स्वर्ग से अभिप्राय ऐसे सुखी समाज से है जहाँ मनुष्य अभाव, अन्याय और शोषण से मुक्त होकर जी सके। दो कदम शेष रहने और अंतिम चढ़ाई की बात बताती है कि लंबा संघर्ष अब लक्ष्य के निकट पहुँच चुका है। इसलिए थककर रुकना नहीं चाहिए। शेष बाधाओं को धैर्य और सामूहिक प्रयास से पार करने पर न्यायपूर्ण जीवन का आदर्श प्राप्त किया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय है कि मानवता और न्याय का युग निकट है। थोड़ा और संघर्ष करने पर शोषणमुक्त, सुखी समाज का स्वप्न साकार हो सकता है।

त्वरित सुझाव: स्वर्ग को परलोक न मानें; अंतिम चढ़ाई को न्यायपूर्ण समाज पाने के शेष संघर्ष से जोड़ें।

2. प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है। रंगों की इस विशाल दुनिया में हम भी तो एक रंग ही हैं। पर हमारे साथ दिक्कत है। एक तो हमें अपने रंगों का पता नहीं है। दूसरा, हम दूसरों के रंगों से डरते हैं। हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है। दूसरे के जैसा होने की या उन्हें अपने जैसा करने की हमारी कोशिशों का कोई बहुत अर्थ भी नहीं है। कारण जबर्दस्ती चढ़ाए गए रंग देर तक टिकते ही नहीं हैं। सबको एक ही रंग में रंगने की कोशिश से बेहतर है कि हम एक-दूसरे को अपना सहयोग दें। दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है। इसी तरह आपस के साथ से हम भी कुछ नए रंग जिंदगी में जोड़ सकते हैं।

सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं। फिर, सफेद और काले रंग के भी कई प्रतिरूप होते हैं। गायिका एमी ग्रांट कहती हैं, 'काले रंग के बिना किसी भी रंग को गहराई नहीं मिलती।' बात केवल परछाई की नहीं है, पूर्णता की है। ज्यादातर लोग निराशा, अकेलापन, चुनौती, डर और उदासी के रंगों से दूर भागते हैं। वे जीवन में मुश्किल समय आते ही बेचैन हो उठते हैं जबकि मनुष्य की विकास यात्रा यही कहती है कि दुख, दर्द, कड़ी मेहनत, धैर्य और चुनौतियों के रंगों से मिलकर ही हमें जीत की चमक मिलती है। लेखक रे विलियम्स का मानना है कि बड़ी बारीकी से हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी करते चले जाते हैं, जो है उसके बारे में ध्यान नहीं देते, अभावों के विषय में सोचते चले जाते हैं और जीवन को जटिल बना लेते हैं।

प्रकृति हर दिन होली खेलती है, एक ही दिन में कई रंग बदलती है। दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। हमारी दुनिया रंगीन हो जाती है जब हम अपने रंगों से संतुष्ट हो जाते हैं और दूसरों का देखकर खुश होते हैं।

[10 अंक]

2(i). 'हमें अपने रंगों का पता नहीं है' – से अभिप्राय है –

[1 अंक]

- (A) अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है।
- (B) जीवन की विविधता का ज्ञान नहीं है।
- (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।
- (D) अपनी परंपराओं का ज्ञान नहीं है।

सही उत्तर: (C) अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के अनुसार रूपक का अर्थ पहचानना चाहिए। यहाँ रंग मनुष्य की निजी विशेषताओं के प्रतीक हैं।
- गद्यांश दूसरों जैसा बनने के बजाय अपनी पहचान समझने और दूसरों का सहयोग करने की बात करता है।

चरण 1: प्रसंग से आशय पहचानें लेखक पहले मनुष्य को रंगों की दुनिया का एक रंग बताता है और फिर कहता है कि हमें अपने रंगों का पता नहीं है। इसलिए यहाँ रंग का अर्थ अपनी विशेषताओं और अपनी पहचान से है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (C) इस आशय को सीधे व्यक्त करता है। (A) केवल स्वभाव तक सीमित है, जबकि विशेषताओं का अर्थ अधिक व्यापक है। (B) पूरे जीवन की विविधता की बात करता है, अपनी पहचान की नहीं। (D) परंपराओं का उल्लेख करता है, जिसका इस वाक्य से संबंध नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष हमें अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: रंग जैसे प्रतीक का अर्थ तय करने के लिए उसके ठीक पहले और बाद के वाक्यों का संदर्भ देखें।

2(ii). 'हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है' – पंक्ति में जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ है –

[1 अंक]

- (A) जीवन का रंग-बिरंगा होना
 - (B) जीवन में दुख-तकलीफ का होना
 - (C) जीवन में सुख-दुख का होना
 - (D) जीवन का बहुत विशाल होना
- सही उत्तर:** (C) जीवन में सुख-दुख का होना

हल:

अवधारणा:

- बहुरंगी जीवन का आशय उसके विविध अनुभवों से है।
- गद्यांश में सुख और दुख दोनों के अनेक रंग बताए गए हैं।

चरण 1: पाठ का आधार लें लेखक स्पष्ट करता है कि सुख सतरंगी है और दुख के भी कई रंग हैं। निराशा, चुनौती, डर तथा जीत की चमक का उल्लेख जीवन के अलग-अलग अनुभवों को सामने लाता है।

चरण 2: सभी विकल्प परखें (C) में सुख-दुख दोनों आते हैं, इसलिए यह प्रसंग के अनुरूप है। (A) रंग-बिरंगे होने का केवल शाब्दिक अर्थ देता है। (B) केवल दुख-तकलीफ बताकर सुख का पक्ष छोड़ देता है। (D) विशालता बताता है, जबकि प्रश्न अनुभवों की विविधता के बारे में है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ जीवन में सुख-दुख का होना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: बहुरंगी का शाब्दिक अर्थ लेने के बजाय गद्यांश में दिए सुख और दुख के उदाहरणों से अर्थ निकालें।

2(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

कथन : प्रकृति के कई रंग हैं और रंगों में कोई होड़ नहीं है।

कारण : प्रकृति सहज ही एक दिन में कई रंग बदलती है।

[1 अंक]

(A) कारण सही है किंतु कथन गलत है।

(B) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता गद्यांश से अलग-अलग जाँची जाती है।
- कारण और कथन का संबंध प्रकृति की सहज विविधता के आधार पर समझना चाहिए।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश की आरंभिक पंक्ति में प्रकृति के अनेक रंग होने और उनमें होड़ न होने की बात स्पष्ट कही गई है। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता अंतिम अनुच्छेद में कहा गया है कि प्रकृति हर दिन होली खेलती है और एक ही दिन में कई रंग बदलती है। अतः कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध और विकल्प प्रकृति का एक दिन में कई रंग बदलना उसकी परिवर्तनशीलता बताता है। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि उसके रंगों में होड़ क्यों नहीं है। दोनों बातें सत्य हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। (A) कथन को गलत और (B) दोनों को गलत बताते हैं, इसलिए असंगत हैं। (D) कारण को सही व्याख्या मानता है, जबकि रंग बदलना होड़ के अभाव का कारण नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दोनों वाक्य सत्य होने पर भी जाँचें कि रंगों का बदलना वास्तव में होड़ न होने का कारण बताता है या नहीं।

2(iv). प्रकृति के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के रंग मनुष्यों की विविध विशेषताओं के प्रतीक हैं।
- केंद्रीय संदेश विविधता की स्वीकृति, संतोष और पारस्परिक सहयोग है।

चरण 1: प्रकृति से मिलने वाला संकेत प्रकृति में अनेक रंग हैं और उनमें होड़ नहीं है। लेखक इसी उदाहरण से समझाता है कि भिन्नता स्वाभाविक है; सभी को एक जैसा बनाने की कोशिश सार्थक नहीं होती।

चरण 2: मानव जीवन में संदेश मनुष्य को अपनी विशेषताओं को पहचानकर संतुष्ट रहना चाहिए और दूसरों की विशेषताओं का सम्मान करना चाहिए। एक-दूसरे से डरने या ईर्ष्या करने के स्थान पर सहयोग करने से जीवन में नए अनुभव और खुशियाँ जुड़ती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक संदेश देता है कि हम प्रकृति की तरह विविधता स्वीकार करें, अपनी पहचान से संतुष्ट रहें और परस्पर सहयोग करके जीवन सुंदर बनाएँ।

त्वरित सुझाव: संदेश वाले उत्तर में प्रकृति के उदाहरण को मनुष्य के अपेक्षित व्यवहार से स्पष्ट रूप से जोड़ें।

2(v). रे विलियम्स के अनुसार जीवन की जटिलता का क्या कारण है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक के विचार का उत्तर उन्हीं के कथन के आधार पर देना चाहिए।
- नकारात्मक सोच और अभावों पर केंद्रित दृष्टि जीवन को कठिन बनाती है।

चरण 1: नकारात्मक घेरबंदी का अर्थ रे विलियम्स के अनुसार हम धीरे-धीरे अपने मन को नकारात्मक विचारों से घेर लेते हैं। हम परिस्थितियों को केवल कमी और असंतोष की दृष्टि से देखने लगते हैं। गद्यांश में इसे दिमाग की नकारात्मक घेरबंदी कहा गया है।

चरण 2: उपलब्धियों की उपेक्षा और अभावों का चिंतन हमारे पास जो है, उस पर ध्यान नहीं जाता। इसके विपरीत जो नहीं है, उसी के बारे में लगातार सोचते रहते हैं। इस तरह संतोष और उपलब्धि सुखों का अनुभव पीछे छूट जाता है तथा अभावों का बोध बढ़ता जाता है।

चरण 3: कारण और परिणाम जोड़ें जीवन की जटिलता का कारण केवल बाहरी कठिनाइयाँ नहीं बताई गई हैं। अपनी सोच को नकारात्मक बना लेना और वर्तमान में उपलब्ध बातों की उपेक्षा करना भी उसे उलझाता है। इसलिए उत्तर में नकारात्मक दृष्टि और अभावों पर लगातार ध्यान, दोनों पक्ष आने चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष रे विलियम्स के अनुसार हम उपलब्धि चीजों की उपेक्षा करके अभावों के बारे में सोचते रहते हैं। ऐसी नकारात्मक मानसिक घेरबंदी ही जीवन को जटिल बनाती है।

त्वरित सुझाव: रे विलियम्स के कथन में जो है और अभावों का अंतर पकड़ें; यही उत्तर के दो मुख्य आधार हैं।

2(vi). 'दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है' – पंक्ति का क्या आशय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रंगों का मेल पारस्परिक सहयोग का रूपक है।
- भिन्न व्यक्तियों की विशेषताएँ जुड़कर जीवन को नए अनुभवों से समृद्ध करती हैं।

चरण 1: रूपक का सामान्य अर्थ जब दो अलग रंग मिलते हैं, तो उनसे एक नया रंग बनता है। लेखक ने इसी परिचित उदाहरण के द्वारा समझाया है कि भिन्नताओं का मेल केवल विरोध नहीं पैदा करता, बल्कि नई संभावनाएँ भी खोलता है।

चरण 2: मानव संबंधों से जोड़ें हर मनुष्य की अपनी पहचान और विशेषताएँ होती हैं। दो व्यक्ति एक-दूसरे को अपने जैसा बनाने का आग्रह छोड़कर सहयोग करें, तो उनकी अलग-अलग क्षमताएँ और अनुभव मिलते हैं। इससे दोनों के जीवन में कुछ नया जुड़ सकता है।

चरण 3: पाठ का मुख्य आशय स्पष्ट करें गद्यांश में इस पंक्ति से पहले सबको एक रंग में रंगने की कोशिश के स्थान पर सहयोग देने की बात है। इसलिए इसका आशय अपनी पहचान मिटा देना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की भिन्नता स्वीकार करके साथ चलना है। ऐसे साथ से संबंध और जीवन अधिक समृद्ध बनते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस पंक्ति का आशय है कि भिन्न विशेषताओं वाले लोग परस्पर सहयोग करें, तो उनकी क्षमताओं और अनुभवों के मेल से जीवन में नई संभावनाएँ तथा खुशियाँ जुड़ती हैं।

त्वरित सुझाव: रूपक समझाते समय पहले रंगों के मेल का अर्थ दें और फिर उसे मनुष्यों के सहयोग से जोड़ें।

2(vii). 'प्रकृति हर दिन होली खेलती है' – से क्या अभिप्राय है ? इसके माध्यम से क्या संदेश दिया गया है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का होली खेलना उसके निरंतर बदलते रंगों का प्रतीक है।
- परिवर्तनशील प्रकृति जीवन में आशा, संतोष और विविधता की स्वीकृति का संदेश देती है।

चरण 1: पंक्ति का अभिप्राय प्रकृति एक ही दिन में कई रंग बदलती है। उसकी विविधता और रंगों का यह निरंतर परिवर्तन होली के रंगों जैसा लगता है। इसलिए लेखक ने प्रकृति के हर दिन होली खेलने की कल्पना की है। यहाँ किसी वास्तविक त्योहार का प्रतिदिन मनाया जाना अभिप्रेत नहीं है।

चरण 2: परिवर्तन से मिलने वाली सीख गद्यांश में अगली ही बात है कि दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। जैसे प्रकृति के रंग बदलते हैं, वैसे ही जीवन की कठिन परिस्थितियाँ भी बदलती हैं। इसलिए दुख आने पर निराश होकर उसे जीवन की स्थायी अवस्था नहीं मानना चाहिए।

चरण 3: संतोष और प्रसन्नता का संदेश लेखक अंत में अपने रंगों से संतुष्ट होने और दूसरों के रंग देखकर खुश होने की बात करता है। इससे सीख मिलती है कि हम अपनी विशेषताएँ स्वीकार करें और दूसरों की भिन्नता से डरने के बजाय उसका आनंद लें। ऐसा दृष्टिकोण जीवन को रंगीन और सुखद बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष इसका अभिप्राय प्रकृति के रंगों का निरंतर बदलना है। संदेश है कि दुख स्थायी नहीं होते; हमें आशावान रहकर अपनी पहचान से संतुष्ट होना और दूसरों की विविधता में प्रसन्न होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से लिखें: पहले प्रकृति के बदलते रंगों का अभिप्राय, फिर जीवन के लिए उसका संदेश।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

विचार करने और उन्हें व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध लेखन के चिरपरिचित विषयों के साथ क्यों नहीं हो पाती ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेखन में लेखक अपने अनुभवों पर नए सिरे से विचार करता है और अपनी भाषा में उन्हें अभिव्यक्त करता है।
- पहले से तैयार सामग्री पर निर्भरता स्वतंत्र चिंतन और मौलिक अभिव्यक्ति को सीमित कर देती है।

चरण 1: प्रचलित विषयों की समस्या पहचानें गाय, वसंत ऋतु या प्रदूषण जैसे बार-बार दिए जाने वाले विषयों पर तैयार निबंध आसानी से मिल जाते हैं। विद्यार्थी अपने अनुभवों को टटोलने के स्थान पर याद किए हुए विचारों और घिसे-पिटे वाक्यों को दोहराने लगता है। इस प्रकार विषय परिचित होने पर भी लेखन का अभ्यास मौलिक विचार करने का अवसर नहीं बन पाता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर चिरपरिचित विषयों पर प्रायः तैयार सामग्री और रटे हुए विचार उपलब्ध रहते हैं। विद्यार्थी स्वतंत्र चिंतन के बजाय उन्हीं का अनुकरण करता है। इससे अपने अनुभवों पर विचार करने, नया दृष्टिकोण खोजने और उसे मौलिक भाषा में व्यक्त करने की प्रक्रिया बाधित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष तैयार विचारों की पुनरावृत्ति मौलिक चिंतन और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को रोकती है।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय तैयार सामग्री, रटने की प्रवृत्ति और मौलिकता की कमी को आपस में जोड़ें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

नाट्यालेख और फिल्म-पटकथा से रेडियो नाट्यलेखन किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मंच और सिनेमा में दृश्य तथा श्रव्य दोनों साधनों से कथा प्रस्तुत होती है।
- रेडियो का श्रोता दृश्य नहीं देखता; इसलिए शब्द, स्वर और ध्वनियाँ दृश्य का आभास कराती हैं।

चरण 1: माध्यम के अनुसार लेखन समझें नाट्यालेख में अभिनय, वेशभूषा और मंच-सज्जा तथा फिल्म-पटकथा में कैमरे और दृश्य-संयोजन का सहारा लिया जाता है। रेडियो में पात्रों की गतिविधि और परिवेश का संकेत सुनने योग्य बनाना पड़ता है। संवाद स्वाभाविक रहें; साथ ही स्वर-भेद और आवश्यक ध्वनि-प्रभाव से पात्र और परिस्थितियाँ स्पष्ट हों।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर नाट्यालेख और फिल्म-पटकथा में दृश्य तथा श्रव्य दोनों साधन होते हैं, जबकि रेडियो नाटक पूर्णतः श्रव्य होता है। इसमें पात्रों, स्थान, वातावरण और घटनाओं का बोध संवादों, स्वर, संगीत तथा ध्वनि-प्रभावों से कराया जाता है; इसलिए संवादों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाट्यलेखन में दृश्य सामग्री को संवाद और ध्वनि के माध्यम से अनुभूत कराया जाता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में पहले दृश्य-श्रव्य और केवल श्रव्य का अंतर लिखें, फिर संवाद तथा ध्वनि की भूमिका बताएँ।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘वायस ओवर’ क्या है ? नाटक में इसका क्या महत्त्व है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वायस ओवर दृश्य में दिखाई देने वाले वक्ता से अलग सुनाई देने वाली कथात्मक आवाज है।
- यह कथा का संदर्भ स्पष्ट करने और दृश्य या समय के परिवर्तन को जोड़ने में सहायक है।

चरण 1: परिभाषा और प्रयोग का संबंध समझें कभी कथानक की कोई आवश्यक बात पात्रों के प्रत्यक्ष संवाद या अभिनय से स्पष्ट नहीं होती। तब बाहर से आने वाली कथावाचक की आवाज सूचना देती है। रेडियो में श्रोता मंच या दृश्य नहीं देख सकता, इसलिए ऐसी आवाज परिवेश और घटनाओं का संदर्भ देने में उपयोगी है। इसका प्रयोग कथा के स्वाभाविक प्रवाह को बनाए रखता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर ‘वायस ओवर’ पर्दे या दृश्य से बाहर की कथात्मक आवाज है। नाटक में यह घटनाओं की पृष्ठभूमि बताती, समय और स्थान के परिवर्तन स्पष्ट करती तथा दृश्यों को जोड़ती है। इससे कथानक का प्रवाह बना रहता है और श्रोता स्थिति को समझ पाता है।

चरण 3: निष्कर्ष वायस ओवर कथानक की पृष्ठभूमि और घटनाओं के बीच संबंध स्पष्ट करने वाली आवाज है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा के बाद पृष्ठभूमि, समय-स्थान परिवर्तन और कथा-संयोजन में से उपयोग अवश्य लिखें।

3(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

समाचार-पत्र में विभिन्न विषयों और क्षेत्रों से संबंधित जानकारी का होना क्यों आवश्यक है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्र विविध रुचियों और आवश्यकताओं वाले पाठकों को संबोधित करता है।
- अलग-अलग क्षेत्रों की तथ्यपूर्ण जानकारी पाठक को व्यापक दृष्टि और निर्णय का आधार देती है।

चरण 1: पाठक की आवश्यकताओं से कारण जोड़ें समाज में विद्यार्थी, किसान, व्यापारी, खिलाड़ी और अन्य वर्गों की सूचना संबंधी जरूरतें अलग होती हैं। राजनीति के साथ अर्थव्यवस्था, विज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा और खेल की जानकारी देने से समाचार-पत्र अधिक उपयोगी बनता है। विषयगत विविधता का अर्थ अपुष्ट सामग्री बढ़ाना नहीं, बल्कि संबंधित क्षेत्रों की विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराना है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर समाचार-पत्र के पाठकों की रुचियाँ और आवश्यकताएँ विविध होती हैं। राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, शिक्षा, खेल आदि क्षेत्रों की जानकारी उन्हें जागरूक बनाती है और निर्णय लेने में सहायता करती है। विषयों की विविधता समाचार-पत्र को उपयोगी, संतुलित तथा व्यापक पाठक-वर्ग के लिए प्रासंगिक बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष विभिन्न विषयों की जानकारी विविध पाठकों की जरूरत पूरी करके उनकी जागरूकता बढ़ाती है।

त्वरित सुझाव: कारण में पाठकों की विविध रुचि और जानकारी की उपयोगिता दोनों का उल्लेख करें।

3(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

संचार का कौन सा माध्यम आपको सर्वाधिक पसंद है और क्यों ? कारण सहित उत्तर लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पसंद का उत्तर व्यक्तिगत हो सकता है, पर उसके पक्ष में स्पष्ट और संगत कारण होने चाहिए।
- माध्यम की गति, पहुँच, प्रस्तुति और उपयोगिता उसके चयन को आधार देते हैं।

चरण 1: माध्यम का चयन और औचित्य तय करें इस उत्तर में टेलीविजन को चुना गया है। उसकी विशेषता चित्र और ध्वनि का संयुक्त प्रयोग है। घटनाओं का सीधा प्रसारण तथा समाचार, शिक्षा और मनोरंजन की उपलब्धता उसके पक्ष में उचित कारण हैं। उत्तर में अनेक माध्यम गिनाने के बजाय चुने गए एक माध्यम के लाभ स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर मुझे संचार का माध्यम टेलीविजन सर्वाधिक पसंद है, क्योंकि इसमें चित्र और ध्वनि साथ मिलते हैं। घटनाओं का सीधा प्रसारण उन्हें समझना आसान बनाता है। समाचारों के साथ शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी मिलते हैं, जिससे जानकारी और मनोरंजन दोनों प्राप्त होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चित्र और ध्वनि का संयुक्त प्रभाव तथा उपयोगी कार्यक्रम टेलीविजन को मेरा पसंदीदा माध्यम बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: एक माध्यम चुनकर उसी की दो या तीन विशेषताओं को अपनी पसंद का स्पष्ट कारण बनाएँ।

4(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

राजमार्ग (हाईवे) पर पिताजी की गाड़ी का अचानक बंद हो जाना

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दिए गए विषय को किसी अनुभव या घटना के माध्यम से सजीव बनाया जाता है। घटनाओं का क्रम स्पष्ट और भाषा सहज होनी चाहिए।
- आरंभ में परिस्थिति, मध्य में अनुभव और अंत में उससे उपजा भाव या सीख रखें। लगभग 120 शब्दों की सीमा में अनावश्यक विवरण से बचें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय का केंद्रीय भाव अनपेक्षित संकट और सूझबूझ है। लेख को प्रथम पुरुष में लिखने से अनुभव में आत्मीयता आएगी। संक्षिप्त शीर्षक दें और मुख्य घटना से सीधे आरंभ करें। फिर घटनाओं का स्वाभाविक क्रम रखें।

चरण 2: विषय के अनुकूल सामग्री यात्रा, अचानक आई खराबी, परिवार की प्रतिक्रिया, सुरक्षित स्थान पर प्रतीक्षा और सहायता मिलने का क्रम रखें। भय के साथ राहत भी दिखाएँ, ताकि घटना केवल विवरण न रहकर अनुभव बने। अंतिम वाक्य पहले के अनुभव से जुड़ा हो, ताकि लेख का समापन अचानक न लगे। छोटे वाक्य, उचित विराम और क्रियाओं की एकरूपता लेख को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। भावों को घटनाओं से व्यक्त करें।

चरण 3: पूरा नमूना रचनात्मक लेख राजमार्ग पर बंद गाड़ी

पिछले रविवार हम दादी के घर जा रहे थे। अचानक राजमार्ग पर पिताजी की गाड़ी झटके खाकर बंद हो गई। चारों ओर तेज़ रफ़्तार वाहन दौड़ रहे थे। पिताजी ने तुरंत गाड़ी किनारे लगाई और चेतावनी बत्तियाँ जला दीं। हम सावधानी से उतरकर सुरक्षित स्थान पर खड़े हो गए। माँ ने पानी दिया, पर मेरे मन में चिंता थी। पिताजी ने सहायता सेवा को फोन किया। प्रतीक्षा लंबी लगी; तभी पास के खेतों से आती ठंडी हवा ने बेचैनी घटाई। कुछ देर बाद मिस्त्री पहुँचा और खराबी दूर कर दी। गाड़ी चली तो सबके चेहरे खिल उठे। उस दिन समझ आया कि कठिन घड़ी में घबराहट से अधिक काम धैर्य और सूझबूझ आते हैं। यात्रा का यह छोटा विराम बड़ी सीख दे गया।

चरण 4: निष्कर्ष दिए गए नमूने में विषयानुकूल घटना, व्यक्तिगत भाव और अनुभव से मिली सीख का समावेश है। विद्यार्थी इसी रूपरेखा में अपनी भाषा और अनुभव के अनुसार लेख लिख सकता है।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, दो मुख्य घटनाएँ और अंतिम अनुभूति तय करें; फिर शब्द-सीमा के भीतर उन्हें एक स्वाभाविक अनुभव में जोड़ें।

4(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

बड़े भाई / बहन की शादी में मेरी भूमिका

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में दिए गए विषय को किसी अनुभव या घटना के माध्यम से सजीव बनाया जाता है। घटनाओं का क्रम स्पष्ट और भाषा सहज होनी चाहिए।
- आरंभ में परिस्थिति, मध्य में अनुभव और अंत में उससे उपजा भाव या सीख रखें। लगभग 120 शब्दों की सीमा में अनावश्यक विवरण से बचें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति विषय का केंद्रीय भाव पारिवारिक उत्सव और उत्तरदायित्व है। लेख को प्रथम पुरुष में लिखने से अनुभव में आत्मीयता आएगी। संक्षिप्त शीर्षक दें और मुख्य घटना से सीधे आरंभ करें। फिर घटनाओं का स्वाभाविक क्रम रखें।

चरण 2: विषय के अनुकूल सामग्री तैयारियों से आरंभ करके स्वागत, व्यवस्था और सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी भूमिका दिखाएँ। केवल कामों की सूची न दें; थकान, उत्साह और भाई के प्रति स्नेह भी व्यक्त करें। अंतिम वाक्य पहले के अनुभव से जुड़ा हो, ताकि लेख का समापन अचानक न लगे। छोटे वाक्य, उचित विराम और क्रियाओं की एकरूपता लेख को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। भावों को घटनाओं से व्यक्त करें।

चरण 3: पूरा नमूना रचनात्मक लेख भाई की शादी में मेरी भूमिका

बड़े भाई की शादी तय होते ही घर में उत्साह की लहर दौड़ गई। मैंने मेहमानों की सूची तैयार करने और निमंत्रण भेजने में पिताजी की सहायता की। शादी के दिन मेरा काम अतिथियों का स्वागत करना और उन्हें ठहरने के स्थान तक पहुँचाना था। छोटे बच्चों की शरारतें सँभालते हुए कभी हँसी आती, कभी पसीना छूटता। मैंने सजावट के फूल ठीक किए और बुजुर्गों के लिए बैठने की व्यवस्था देखी। दोस्तों के साथ संगीत कार्यक्रम भी तैयार किया। जब भाई दूल्हे के रूप में सामने आए, तो गर्व से आँखें चमक उठीं। थकान के बावजूद सबकी मुसकान देखकर मन प्रसन्न था। इस समारोह ने मुझे सिखाया कि परिवार की खुशी में भागीदारी केवल उत्सव मनाना नहीं, ज़िम्मेदारी निभाना भी है।

चरण 4: निष्कर्ष दिए गए नमूने में विषयानुकूल घटना, व्यक्तिगत भाव और अनुभव से मिली सीख का समावेश है। विद्यार्थी इसी रूपरेखा में अपनी भाषा और अनुभव के अनुसार लेख लिख सकता है।

त्वरित सुझाव: पहले आरंभ, दो मुख्य घटनाएँ और अंतिम अनुभूति तय करें; फिर शब्द-सीमा के भीतर उन्हें एक स्वाभाविक अनुभव में जोड़ें।

4(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जीव-जंतुओं का घटता संसार

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय का मौलिक चित्रण, विचारों का स्वाभाविक क्रम और संवेदनशील भाषा आवश्यक है।
- जीव-जंतुओं की घटती संख्या को उनके आवास, मानवीय गतिविधियों और पर्यावरण-संतुलन से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की रूपरेखा लेख का शीर्षक विषय के अनुरूप रखें। आरंभ में पक्षियों और जीव-जंतुओं की कम होती उपस्थिति का दृश्य प्रस्तुत करें। मुख्य भाग में वन-विनाश, प्रदूषण, शिकार और बदलती जलवायु जैसे कारण बताएँ। अंत में संरक्षण के व्यावहारिक उपायों के साथ संवेदनशील संदेश दें। लगभग 120 शब्दों की सीमा में विचारों की पुनरावृत्ति से बचें। अंतिम वाक्य पहले के अनुभव से जुड़ा हो, ताकि लेख का समापन अचानक न लगे। छोटे वाक्य, उचित विराम और क्रियाओं की एकरूपता लेख को प्रभावपूर्ण बनाते हैं। भावों को घटनाओं से व्यक्त करें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख जीव-जंतुओं का घटता संसार

सुबह आँगन में गौरैया की चहचहाहट अब कम सुनाई देती है। कभी पेड़ों पर उछलती गिलहरियाँ और खेतों में उड़ती तितलियाँ सहज दिखाई देती थीं; आज उनका संसार सिमट रहा है। जंगल कट रहे हैं, नदियाँ दूषित हो रही हैं और बस्तियाँ प्राकृतिक आवासों को निगल रही हैं। शिकार तथा बदलती जलवायु भी अनेक प्रजातियों के अस्तित्व के लिए संकट हैं। यह केवल जीवों की हानि नहीं, हमारे पर्यावरण के संतुलन का टूटना है। प्रत्येक जीव प्रकृति की जीवन-शृंखला की आवश्यक कड़ी है। हमें पेड़ लगाने, जलस्रोत बचाने, प्लास्टिक घटाने और अवैध शिकार रोकने में योगदान देना चाहिए। विकास तभी सार्थक होगा, जब धरती पर मनुष्य के साथ दूसरे प्राणियों को भी सुरक्षित जीवन मिलेगा। उनकी रक्षा हमारी साझा जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष जीव-जंतुओं का संरक्षण प्राकृतिक संतुलन और मानव जीवन की सुरक्षा से जुड़ा है। प्रस्तुत लेख दृश्यात्मक आरंभ, संकट के कारणों और संरक्षण के संदेश के माध्यम से विषय को पूर्ण करता है।

त्वरित सुझाव: पहले एक परिचित दृश्य चुनें, फिर संकट के कारण और अंत में दो-तीन ठोस उपाय लिखें; मुख्य लेख को लगभग 120 शब्दों में रखें।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

व्यक्तिचित्र फीचर को रोचक, पठनीय और प्रभावशाली रूप में किस प्रकार तैयार किया जा सकता है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिचित्र फीचर किसी व्यक्ति के जीवन और व्यक्तित्व का तथ्यपरक, रोचक तथा सजीव शब्दचित्र है।
- साक्षात्कार, अवलोकन और प्रामाणिक जानकारी के आधार पर उसकी विशेषताओं को घटनाओं तथा व्यवहार से उभारा जाता है।

चरण 1: व्यक्तिचित्र के लिए सामग्री और शैली चुनना व्यक्ति से बातचीत, उसके काम का प्रत्यक्ष अवलोकन और परिचितों से प्राप्त सूचनाएँ सामग्री के उपयोगी स्रोत हैं। प्राप्त विवरणों की पुष्टि आवश्यक है। केवल जन्म, शिक्षा और उपलब्धियों की सूची देने से व्यक्तित्व नहीं उभरता; किसी अर्थपूर्ण घटना या आदत से उसकी विशिष्टता दिखानी चाहिए। किसी दृश्य, संवाद या छोटे प्रसंग के चयन से पाठक को उस व्यक्ति के स्वभाव का अनुभव होता है। निजी जीवन के अप्रासंगिक विवरण और अपुष्ट बातें छोड़ दें। अंत में ऐसा संकेत दें जो पूरे व्यक्तित्व की छाप को मजबूत करे। उत्तर में सामग्री-संग्रह, सजीव चित्रण, सरल भाषा और तथ्यपरकता को समेटें।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर व्यक्तिचित्र फीचर तैयार करने के लिए संबंधित व्यक्ति का साक्षात्कार, प्रत्यक्ष अवलोकन और प्रामाणिक जानकारी आवश्यक है। उसके रूप, वेशभूषा, हावभाव, बोलचाल, आदतों तथा कार्यशैली का सजीव चित्रण करना चाहिए। जीवन के रोचक प्रसंग, संघर्ष, उपलब्धियाँ और उपयुक्त कथन व्यक्तित्व को उभारते हैं। प्रभावी शीर्षक तथा किसी आकर्षक घटना से आरंभ पाठक की जिज्ञासा बढ़ाते हैं। सरल, प्रवाहपूर्ण भाषा और सुव्यवस्थित प्रस्तुति पठनीयता लाती है। तथ्यों की शुद्धता, संतुलित दृष्टि तथा अनावश्यक प्रशंसा से बचाव फीचर को विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रामाणिक सामग्री, विशिष्ट प्रसंगों से बना सजीव शब्दचित्र और सहज भाषा व्यक्तिचित्र फीचर को रोचक, पठनीय तथा प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सामग्री के स्रोत, व्यक्तित्व की विशिष्टताएँ, रोचक प्रसंग और भाषा-शैली अवश्य जोड़ें; केवल जीवन-वृत्त की सूची न दें।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

संवाददाता और विशेष संवाददाता के बीच के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता समाचार संस्थान के लिए घटनाओं की जानकारी जुटाकर समाचार भेजता है। समाचार की तथ्यपरकता और स्रोतों की विश्वसनीयता उसके काम का आधार हैं।
- विशेष संवाददाता किसी महत्वपूर्ण विषय या क्षेत्र का अनुभवी जानकार होता है। वह घटना के साथ उसकी पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव का विवेचन भी करता है।

चरण 1: कार्यक्षेत्र और प्रस्तुति का अंतर समझें सामान्य संवाददाता प्रायः अपने क्षेत्र की नियमित घटनाओं की रिपोर्ट देता है और क्या, कब, कहाँ तथा कैसे हुआ जैसे प्रश्नों के उत्तर जुटाता है। विशेष संवाददाता को राजनीति, अर्थव्यवस्था या विदेश मामलों जैसे क्षेत्र की गहरी समझ होती है। उससे समाचार के संदर्भ, विभिन्न पक्षों और व्यापक महत्त्व को स्पष्ट करने की अपेक्षा रहती है। दोनों को तथ्यों की जाँच करनी होती है; विशेष रिपोर्ट का विश्लेषण भी प्रमाणों पर आधारित होता है।

चरण 2: उदाहरण सहित लगभग 80 शब्दों का उत्तर लिखें संवाददाता अपने क्षेत्र की दैनिक घटनाओं और गतिविधियों की जानकारी एकत्र करके समाचार भेजता है। विशेष संवाददाता किसी विषय या क्षेत्र का अनुभवी जानकार होता है, जो महत्वपूर्ण घटनाओं की पृष्ठभूमि, कारणों और प्रभावों का विश्लेषण भी करता है। उदाहरणतः संवाददाता बजट पेश होने की सूचना और प्रमुख घोषणाएँ देगा, जबकि आर्थिक मामलों का विशेष संवाददाता बताएगा कि बजट का रोजगार, महँगाई और आम जनता पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इस प्रकार सामान्य समाचार-संग्रह की तुलना में विशेष संवाददाता का काम अधिक गहन और संदर्भपूर्ण होता है।

चरण 3: निष्कर्ष संवाददाता नियमित घटनाओं का समाचार देता है, जबकि विशेष संवाददाता विषयगत जानकारी के आधार पर महत्वपूर्ण घटनाओं की गहराई और संदर्भ स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय कार्यक्षेत्र, विषयगत विशेषज्ञता और विश्लेषण को आधार बनाएँ; फिर एक ही घटना का दोनों प्रकार का कवरेज बताकर उदाहरण स्पष्ट करें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण किस प्रकार किया जा सकता है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक पात्रों का परिचय और मनोभाव बता सकता है। नाटक में उन्हीं विशेषताओं को दर्शकों के सामने संवाद, अभिनय और क्रियाओं से प्रकट करना पड़ता है।
- रूपांतरण करते समय पात्रों का मूल स्वभाव, पारस्परिक संबंध और कथा में उनकी भूमिका सुरक्षित रखते हुए उन्हें मंच के अनुकूल बनाया जाता है।

चरण 1: वर्णन को मंचीय व्यवहार में बदलें पहले मुख्य पात्रों, उनके उद्देश्य और संघर्ष की पहचान करें। कहानी में लेखक ने किसी पात्र को डरपोक, क्रोधित या दयालु बताया है तो नाटक में केवल वह विशेषण लिखना पर्याप्त नहीं होगा। उसके बोलने के ढंग, हाव-भाव और व्यवहार से वही गुण दिखाना होगा। मन की बात आवश्यकतानुसार स्वगत कथन या दूसरे पात्र से बातचीत में व्यक्त की जा सकती है। संवाद पात्र की आयु, सामाजिक स्थिति और परिस्थिति के अनुरूप हों। वेशभूषा तथा प्रवेश-प्रस्थान के संकेत भी अभिनय में सहायता करते हैं।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर प्रस्तुत करें कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय उनके स्वभाव, संबंधों और संघर्ष को समझकर मंचानुकूल संवाद तथा क्रियाएँ निर्धारित की जाती हैं। कथावाचक द्वारा बताया गया चरित्र अब पात्र की वाणी, हाव-भाव और अभिनय से प्रकट होता है। मनोभावों को आवश्यकतानुसार संवाद या स्वगत कथन बनाया जा सकता है। भाषा पात्र की उम्र, परिवेश और सामाजिक स्थिति के अनुकूल होनी चाहिए। वेशभूषा, प्रवेश-प्रस्थान तथा अभिनय के निर्देश भी दिए जाते हैं। इस प्रक्रिया में मूल चरित्र और कथ्य की रक्षा करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी के वर्णित पात्र नाटक में संवाद और अभिनय के माध्यम से जीवंत होते हैं। मंच की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन करते हुए उनके मूल चरित्र को सुरक्षित रखना चाहिए।

त्वरित सुझाव: किसी चरित्र-गुण को चुनकर सोचें कि अभिनेता उसे बोलचाल, चेहरे और क्रिया से कैसे दिखाएगा; यही वर्णन से नाट्य रूपांतरण की मुख्य प्रक्रिया है।

6(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘आत्मपरिचय’ कविता से उद्धृत पंक्ति ‘मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ’ के संदर्भ में लिखिए कि संसार के प्रति कवि की इस विरक्ति का क्या कारण है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की संसार से विरक्ति सामाजिक संबंधों का पूर्ण निषेध नहीं, बल्कि स्वार्थपूर्ण व्यवहार और उसकी निजी प्रेममय संवेदना के बीच असंगति का परिणाम है।
- उत्तर में संसार की अपेक्षाओं से दूरी और कवि की स्वतंत्र भावभूमि के बीच संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: सांसारिक जीवन और कवि के मूल्यों का अंतर संसार प्रायः लाभ, प्रतिष्ठा और बाहरी उपलब्धियों को महत्त्व देता है। कवि अपनी भावनाओं, प्रेम और आत्मिक अनुभूतियों को अधिक महत्त्व देता है। इसीलिए वह लोकमत के अनुसार अपने व्यक्तित्व को बदलना स्वीकार नहीं करता। उसकी विरक्ति का कारण मनुष्यों के प्रति घृणा नहीं, जीवन के भिन्न मूल्य हैं।

चरण 2: कविता के प्रसंग से कारण की पुष्टि कवि जगत से नेह जोड़ने की बात भी कहता है और फिर भी उससे अलग अपना गीत गाता है। यह द्वंद्व दिखाता है कि वह जीवन का भार उठाते हुए भी अपनी भीतरी मस्ती बनाए रखता है। अतः संसार का ध्यान न करना अपनी संवेदना और स्वतंत्रता की रक्षा है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कवि प्रेम, अनुभूति और आत्मिक आनंद को जीवन का आधार मानता है, जबकि संसार स्वार्थ, लाभ और बाहरी प्रतिष्ठा को महत्त्व देता है। इस मूल्यभेद के कारण वह संसार की अपेक्षाओं से विरक्त है। जगत से स्नेह रखते हुए भी वह उसके नियमों से अपना व्यक्तित्व नहीं बाँधता। इसलिए लोकमत की चिंता छोड़कर अपनी मस्ती में अपना गीत गाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि की विरक्ति का मूल कारण संसार की स्वार्थमय दृष्टि और उसकी प्रेममय, स्वतंत्र जीवनदृष्टि का अंतर है।

त्वरित सुझाव: विरक्ति को संसार से घृणा न कहें; जगत से स्नेह और लोकमत से स्वतंत्रता का अंतर स्पष्ट करें।

6(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘लेखन के लिए आपकी दृष्टि में कथ्य (भाव) अधिक महत्त्वपूर्ण है या माध्यम’ - ‘बात सीधी थी पर’ कविता के संदर्भ में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य लेखक का मूल भाव अथवा विचार है और माध्यम उसे व्यक्त करने वाली भाषा तथा शैली है।
- सार्थक लेखन में भाषा भाव को सहज रूप से पाठक तक पहुँचाती है; शब्दों का अनावश्यक प्रदर्शन संप्रेषण को बाधित करता है।

चरण 1: तर्क का आधार निश्चित करना कथ्य लेखन का उद्देश्य तय करता है, इसलिए उसे प्राथमिकता मिलनी चाहिए। माध्यम भी आवश्यक है, क्योंकि विचार भाषा से ही पाठक तक पहुँचता है। फिर भी माध्यम की सफलता इसी से आँकी जाएगी कि उसने मूल भाव को कितना स्पष्ट और प्रभावी बनाया है। दोनों की उपयोगिता बताते हुए उनकी भूमिका में यह अंतर रखना आवश्यक है।

चरण 2: कविता के अनुभव से तर्क जोड़ना कविता में सीधी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा में उलझाने पर बात की सहजता खो जाती है। लेखक शब्दों को सँवारने के प्रयास में भाव की पकड़ ढीली कर देता है। यह अनुभव बताता है कि अभिव्यक्ति पर अत्यधिक आग्रह कथ्य को कमजोर कर सकता है; सहज भाषा भाव की विश्वसनीय सहयोगी बनती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर मेरी दृष्टि में लेखन का कथ्य अधिक महत्त्वपूर्ण है; माध्यम उसकी प्रभावी अभिव्यक्ति का साधन है। बात सीधी थी पर मैं भाषा को अनावश्यक रूप से उलझाने पर सरल बात अपनी सहजता खो देती है। अतः शब्दों का चमत्कार भाव पर हावी नहीं होना चाहिए। सफल लेखन में भाषा कथ्य के अनुकूल, स्पष्ट और स्वाभाविक रहकर उसे पाठक तक पहुँचाती है।

चरण 4: निष्कर्ष कथ्य को प्राथमिकता देते हुए उसके अनुकूल सहज माध्यम अपनाना ही कविता से प्राप्त लेखन का सार्थक संकेत है।

त्वरित सुझाव: केवल भाषा को अनुपयोगी न बताएँ; कथ्य की प्रधानता और माध्यम की सहायक भूमिका को कविता के अनुभव से सिद्ध करें।

6(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

“उषा” कविता भोर की आसमानी गति को धरती की जीवन भरी हलचल से जोड़ने वाली कविता है।’ पुष्टि कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा में आकाश के बदलते रंग घरेलू जीवन, ग्रामीण परिवेश और मानवीय गतिविधियों के परिचित बिंबों से व्यक्त हुए हैं।
- कविता के बिंबों में प्रकृति और मनुष्य की दुनिया का साम्य देखकर कथन की पुष्टि करनी है।

चरण 1: आकाश के रंगों में घरेलू जीवन पहचानना भोर के नीले आकाश को नीले शंख और राख से लीपे गीले चौके के रूप में देखा गया है। लालिमा को काली सिल पर केसर के रंग से जोड़ा गया है। चौका, सिल और केसर घर के श्रम तथा दैनिक जीवन से जुड़े पदार्थ हैं। इनके माध्यम से दूरस्थ आकाश आत्मीय घरेलू अनुभव का हिस्सा बनता है।

चरण 2: बदलती भोर को मानवीय क्रिया से जोड़ना लाल खड़िया से मली गई स्लेट का बिंब सीखने और लिखने की परिचित दुनिया लाता है। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब स्नान की मानवीय गतिविधि का आभास देता है। सूर्योदय के साथ उषा का जादू टूटता है और जीवन के जागरण का संकेत मिलता है। इसलिए बिंब केवल रंगों का विवरण नहीं हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर उषा में आकाश की बदलती छवियाँ धरती के परिचित जीवन से जुड़ती हैं। राख से लीपा गीला चौका, केसर लगी काली सिल और लाल खड़िया से मली स्लेट घरेलू काम तथा पढ़ाई की याद दिलाते हैं। नीले जल में झिलमिलाती गौर देह मानवीय हलचल का आभास देती है। इस प्रकार भोर का सौंदर्य जीवन के आत्मीय अनुभवों से सजीव बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष घरेलू वस्तुओं और मानवीय गतिविधियों के बिंब भोर की आसमानी गति को धरती के जीवंत संसार से जोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: कथन की पुष्टि में चौका, सिल, स्लेट और गौर देह के बिंबों को उनके दैनिक जीवन के संदर्भ से अवश्य जोड़ें।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘सदा पंक पर ही होता, जल विप्लव प्लावन’ – पंक्ति में प्रयुक्त ‘पंक’ और ‘विप्लव’ शब्द की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक वह शब्द या बिंब है जो अपने प्रत्यक्ष अर्थ के साथ व्यापक सामाजिक अर्थ भी प्रकट करता है।
- बादल राग में बादल और वर्षा परिवर्तनकारी शक्ति के, तथा धरती के साधारण छोटे जीव और पौधे वंचित जीवन के पक्षधर बिंब हैं।

चरण 1: पंक का सामाजिक अर्थ पंक का शाब्दिक अर्थ कीचड़ है। कविता के सामाजिक आशय में वह नीचे रखे गए, उपेक्षित और शोषित जनसमुदाय का प्रतीक है। जैसे वर्षा का जल पंक तक पहुँचता है और छोटे पौधों को जीवन देता है, वैसे ही परिवर्तन से वंचित समाज में नई चेतना का संचार होता है।

चरण 2: विप्लव की प्रतीकात्मकता और संक्षिप्त उत्तर विप्लव का अर्थ क्रांति अथवा व्यापक परिवर्तन है। यहाँ वह शोषणकारी व्यवस्था को बदलने वाली जनचेतना का प्रतीक है। लगभग 40 शब्दों में उत्तर: पंक उपेक्षित, शोषित और निम्नवर्गीय जनता का प्रतीक है। विप्लव अन्यायपूर्ण व्यवस्था बदलने वाली क्रांति का प्रतीक है। पंक्ति बताती है कि क्रांतिकारी परिवर्तन की हलचल वंचित जनता के बीच जन्म लेती है और उसके जीवन में नई चेतना जगाती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक शोषित जनता और विप्लव उसके जीवन तथा सामाजिक व्यवस्था को बदलने वाली क्रांति का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: दोनों शब्दों का शाब्दिक अर्थ भर न लिखें; उन्हें शोषित जनता और सामाजिक क्रांति के प्रतीक के रूप में स्पष्ट करें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता में ‘यह अवसर खो देंगे’ – पंक्ति में कौन से अवसर को खोने की बात कही जा रही है ? इससे मीडियाकर्मी के किस व्यवहार का पता लगता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में संवेदनहीन मीडिया द्वारा पीड़ा को प्रदर्शन और मनोरंजन की सामग्री बनाने पर व्यंग्य है।
- उत्तर में अवसर का अर्थ तथा उससे प्रकट मीडियाकर्मी का व्यवहार दोनों स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: अवसर का संदर्भ मीडियाकर्मी अपाहिज व्यक्ति से उसकी पीड़ा के विषय में बार-बार प्रश्न करता है। उसका उद्देश्य सहानुभूतिपूर्वक सहायता करना नहीं, बल्कि उसे कैमरे के सामने भावुक करके रूलाना है। आँसुओं और असहाय चेहरे के दृश्य से कार्यक्रम को प्रभावशाली और दर्शकों के लिए आकर्षक बनाया जा सकता है। इसलिए वह समय रहते इस दृश्य को पकड़ लेना चाहता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर यहाँ अवसर से आशय अपाहिज व्यक्ति को रुलाकर उसकी पीड़ा और आँसुओं का दृश्य कैमरे में कैद करने से है। इससे मीडियाकर्मी की संवेदनहीन, अवसरवादी और व्यावसायिक मानसिकता प्रकट होती है; वह मानवीय दुख को कार्यक्रम की लोकप्रियता का साधन बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति में पीड़ित के आँसू कैमरे में कैद करने का अवसर खोने की बात है; इससे मीडियाकर्मी की संवेदनहीन व्यावसायिकता सामने आती है।

त्वरित सुझाव: अवसर बताते समय पीड़ित की सहायता के स्थान पर उसके आँसुओं के प्रदर्शन का उद्देश्य स्पष्ट करें।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘पतंग’ कविता से उद्धृत पंक्ति - ‘डाल की तरह लचीले वेग से’ का आशय स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में बच्चों की गतिशीलता की तुलना डाल के लचीलेपन से की गई है।
- कविता में बालसुलभ उत्साह, निर्भयता और शरीर की सहज स्फूर्ति प्रमुख हैं।

चरण 1: उपमा का अर्थ समझना हवा में हिलती डाल लचीली होती है; वह झुकती और मुड़ती है, फिर भी उसमें गति बनी रहती है। पतंग उड़ाते बच्चों का शरीर भी इसी प्रकार सहजता से झुकता, मुड़ता और सँभलता है। कवि इस बिंब से उनके शरीर की स्फूर्ति को मूर्त बनाता है। पतंग के साथ उनका मन भी उल्लास से भर जाता है। यहाँ डाल से आशय किसी जड़ बाधा से नहीं, गति और लचीलेपन से है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर इस पंक्ति में पतंग उड़ाते बच्चों के शरीर की लचक और तीव्र गति व्यक्त हुई है। वे हवा में झूमती डाल की तरह सहजता से झुकते, मुड़ते और दौड़ते हैं। उनका उत्साह, शारीरिक स्फूर्ति तथा निर्भय चंचलता इस सुंदर उपमा से प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष डाल की उपमा बच्चों की लचीली, स्फूर्तिपूर्ण तथा उत्साह से भरी गतिशीलता को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: उपमा का अर्थ खोलते समय डाल की लचक को बच्चों के झुकने, मुड़ने और दौड़ने से जोड़ें।

8. धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।।
माँगि कै खैबौ, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।

[5 अंक]

8(i). काव्यांश का वर्ण्य विषय है –

[1 अंक]

- (A) समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन
 - (B) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन
 - (C) समाज में विद्यमान भेदभाव का वर्णन
 - (D) धर्म के नाम पर हो रहे आडंबरों का वर्णन
- सही उत्तर:** (B) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन

हल:

अवधारणा:

- वर्ण्य विषय का चयन पूरे काव्यांश के केंद्रीय कथ्य के आधार पर किया जाता है।
- जातिसूचक संबोधनों और विवाह के संदर्भ से जाति-पाँति संबंधी भेदभाव उभरता है।

चरण 1: केंद्रीय संकेत पहचानना कवि के लिए रजपूत और जुलाहा जैसे जातिसूचक शब्द कहे जाते हैं। आगे किसी की जाति बिगाड़ने और विवाह का उल्लेख है। ये संकेत जाति के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन करने वाली मानसिकता पर केंद्रित हैं। तुलसी राम की भक्ति को अपना परिचय बनाकर इस भेदभाव का प्रतिरोध करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) उपयुक्त नहीं, क्योंकि आर्थिक स्थिति का व्यवस्थित वर्णन नहीं है। (C) समाज के भेदभाव की सामान्य बात कहता है, जबकि (B) जाति-पाँति का विशिष्ट और अधिक सटीक विषय बताता है। (D) में धार्मिक आडंबर केंद्रीय विषय होते, पर यहाँ केंद्र जातिगत भेदभाव है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन।

त्वरित सुझाव: सामान्य और विशिष्ट विकल्प दोनों मिलें तो पाठ के प्रत्यक्ष संकेतों से मेल खाने वाला विशिष्ट विकल्प चुनें।

8(ii). 'काहूकी बेटी सो बेटा न ब्याहब' – पंक्ति के माध्यम से कटाक्ष किया गया है –

[1 अंक]

- (A) समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था पर
- (B) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर
- (C) पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता पर
- (D) समाज की विघटनकारी व्यवस्था पर

सही उत्तर: (C) पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता पर

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति के विशिष्ट बेटी-संबंधी प्रयोग से पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता पर कटाक्ष उभरता है।
- जाति की रक्षा के नाम पर स्त्री और पुरुष के वैवाहिक संबंधों को अलग दृष्टि से देखा जाता है।

चरण 1: बेटी और बेटे के उल्लेख का संकेत तुलसी विशेष रूप से कहते हैं कि उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना है। पुरुष प्रधान व्यवस्था में दूसरे परिवार की बेटी बहू बनकर आती है और उसकी जाति को परिवार की जातिगत शुद्धता से जोड़ा जाता है। बेटी को दूसरे परिवार में देने की स्थिति में वही चिंता नहीं दिखाई जाती। यह असमान दृष्टि पुरुष प्रधान मानसिकता को प्रकट करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद (A) जाति व्यवस्था और (B) जाति आधारित विवाह का सामान्य संदर्भ देते हैं, किंतु प्रश्न में विशेष रूप से बेटी से बेटे के विवाह का उल्लेख स्त्री-पुरुष के प्रति असमान सामाजिक दृष्टि पर ध्यान खींचता है। इसलिए (C) अधिक उपयुक्त है। (D) विघटनकारी व्यवस्था का व्यापक कथन है; उसमें इस विशिष्ट लैंगिक संकेत की पहचान नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता पर।

त्वरित सुझाव: बेटी से बेटे के विवाह वाले विशेष प्रयोग को परिवार की जाति और स्त्री की स्थिति के भेद से जोड़ें।

8(iii). तुलसीदास स्वयं को किसका दास मानते हैं ?

[1 अंक]

- (A) नियमों का
- (B) परिस्थितियों का
- (C) स्वयं का
- (D) राम का

सही उत्तर: (D) राम का

हल:

अवधारणा:

- कवि का आत्मपरिचय काव्यांश की स्पष्ट पंक्ति से निर्धारित होता है।
- राम के प्रति दास्य भाव तुलसी की भक्ति और पहचान का आधार है।

चरण 1: प्रत्यक्ष प्रमाण पंक्ति 'तुलसी सरनाम गुलामु है राम को' में तुलसी स्वयं को राम का गुलाम अर्थात सेवक कहते हैं। वे लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी कहने देते हैं, क्योंकि उनका स्थायी परिचय किसी सामाजिक उपाधि से नहीं, रामभक्ति से जुड़ा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखना (A) नियमों का दास होना पाठ में नहीं कहा गया है। (B) परिस्थितियों की अधीनता भी कवि का आत्मपरिचय नहीं है। (C) स्वयं का दास मानना उद्धृत पंक्ति के विरुद्ध है। केवल (D) में दिया गया राम का नाम काव्यांश के प्रत्यक्ष कथन से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है: तुलसीदास स्वयं को राम का दास मानते हैं।

त्वरित सुझाव: ऐसे प्रत्यक्ष प्रश्न में 'गुलामु है राम को' जैसे निर्णायक शब्द खोजकर विकल्प से मिलाएँ।

8(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए :

कथन : परंपरावादी एवं रूढ़िग्रस्त समाज में रहते हुए भी तुलसी निर्विकार जीवन व्यतीत कर रहे थे।

कारण : वे सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्त थे।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
(B) कारण सही है लेकिन कथन गलत है।
(C) कथन सही है लेकिन कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता के साथ उनके व्याख्यात्मक संबंध की भी जाँच करनी चाहिए।
- इस प्रसंग में सामाजिक उत्तरदायित्व विवाह और सांसारिक लेन-देन के बंधनों की ओर संकेत करते हैं।

चरण 1: कथन की जाँच समाज कवि को भिन्न जातिसूचक और अपमानजनक नाम देता है, फिर भी वे कहते हैं कि जिसे जो रुचे वह कहे। वे राम के दास होने में संतुष्ट हैं। इससे रूढ़िग्रस्त समाज के बीच भी उनकी निर्लिप्तता और निर्विकार जीवन की पुष्टि होती है। अतः कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच कवि को किसी के परिवार में वैवाहिक संबंध नहीं जोड़ना है और न किसी से सांसारिक लेन-देन की अपेक्षा रखनी है। इस विशेष संदर्भ में वे सामाजिक उत्तरदायित्वों और लोकापेक्षा के बंधन से मुक्त हैं। इसलिए दिया गया कारण भी सही है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध जब कवि सामाजिक लेन-देन तथा वैवाहिक अपेक्षाओं से बँधे नहीं हैं, तब लोगों की जातिगत धारणाएँ उनके व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर पातीं। यही मुक्ति उनकी निर्विकारता का कारण है। (A) और (B) कथन को गलत बताते हैं; (C) सही व्याख्या को नकारता है, इसलिए ये अनुचित हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है: कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक उत्तरदायित्व को यहाँ विवाह और लेन-देन के प्रसंग में समझकर कथन से उसका संबंध जोड़ें।

8(v). 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' – से आशय है –

[1 अंक]

- (A) न लेना एक न देना दो
(B) किसी से कोई बुरी बात न कहना
(C) किसी से कोई संबंध न रखना
(D) बिना वजह की मुसीबत होना
- सही उत्तर:** (C) किसी से कोई संबंध न रखना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का आशय प्रसंग से लिया जाता है, केवल शब्दों के शाब्दिक अर्थ से नहीं।
- कवि सांसारिक लेन-देन और स्वार्थपूर्ण संबंधों से अपनी निर्लिप्तता प्रकट करते हैं।

चरण 1: प्रसंग के अनुसार अर्थ 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' में कवि कहते हैं कि उन्हें किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। वे माँगकर खा लेने और मसजिद में सो लेने में संतुष्ट हैं। इसलिए दूसरों से स्वार्थपूर्ण अपेक्षा अथवा सांसारिक संबंध जोड़ने की चिंता नहीं करते। यही उनकी निर्लिप्त जीवनदृष्टि है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (C) किसी से कोई संबंध न रखने का भाव देकर इस प्रसंग के लेना-देना न होने के आशय को व्यक्त करता

है। (A) केवल शब्दों का शाब्दिक रूप है। (B) किसी को बुरी बात न कहना इस पंक्ति का अर्थ नहीं है। (D) बिना वजह मुसीबत होने का संकेत भी यहाँ नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: किसी से कोई संबंध न रखना।

त्वरित सुझाव: लेना-देना न होने के मुहावरे को सांसारिक संबंधों से निर्लिप्त रहने के प्रसंग में समझें।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

वैश्वीकरण के इस दौर में क्या भगत जी का चरित्र बाज़ार को सार्थकता और समाज में शांति स्थापित कर सकता है ? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भगत जी का चरित्र आवश्यकता, संतोष और संयम पर आधारित है। बाज़ार की उपयोगिता मनुष्य की वास्तविक जरूरत पूरी करने में है।
- असीम खरीदारी और धन का दिखावा मनुष्य में अभाव, तुलना और ईर्ष्या जगाते हैं; संतुष्ट व्यक्ति इनके प्रभाव से बचता है।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को समझें भगत जी चूरन बेचते हैं और अपनी निश्चित कमाई हो जाने पर बिक्री रोक देते हैं। बचा चूरन बच्चों को बाँट देते हैं। अधिक धन पाने का अवसर होने पर भी वे लोभ नहीं करते। इसलिए उनका व्यवहार बाज़ार के बीच रहते हुए भी बाज़ार के आकर्षण से मुक्त रहने का उदाहरण है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हाँ, भगत जी का संतोषी, संयमी और निर्लोभी चरित्र वैश्वीकरण में भी उपयोगी है। वे आवश्यकता भर कमाकर शेष चूरन बच्चों में बाँट देते हैं। ऐसी वृत्ति अनावश्यक उपभोग, ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा घटाकर बाज़ार को उपयोगी तथा समाज को शांत बना सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष भगत जी का संतोष और आवश्यकतापरक व्यवहार बाज़ार की सार्थकता तथा सामाजिक शांति का आधार बन सकता है।

त्वरित सुझाव: भगत जी की निश्चित कमाई और बच्चों में चूरन बाँटने की घटना को संतोष तथा सामाजिक सद्भाव से जोड़ें।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'शिरीष के फूल' पाठ में कबीर को शिरीष की भाँति क्यों बताया गया है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी फूलता रहता है; उसका स्वभाव मस्ती, अनासक्ति और जीवन की अजेयता का प्रतीक है।
- कबीर की फक्कड़ता बाहरी बाधाओं से अप्रभावित रहकर सत्य कहने और रचनात्मक बने रहने में दिखाई देती है।

चरण 1: समानता का आधार पहचानें लेखक कबीर और शिरीष की तुलना उनके रूप के कारण नहीं, उनकी जीवन-दृष्टि के कारण करते हैं। शिरीष भीषण गर्मी में भी खिला रहता है। इसी प्रकार कबीर अपने समय की कठिन सामाजिक स्थितियों और विरोध के बीच निर्भीक रहे। उनकी मस्ती परिस्थितियों की अनुकूलता पर निर्भर नहीं थी।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कबीर शिरीष की तरह फक्कड़, मस्त और अनासक्त थे। शिरीष भीषण गर्मी में भी खिलता है; वैसे ही कबीर सामाजिक विरोध और रूढ़ियों के बीच निर्भीक रहे। बाहरी परिस्थितियों से अप्रभावित उनकी सरस, सहज और अपराजेय जीवन-दृष्टि उन्हें शिरीष के समान बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कबीर और शिरीष में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी बनी रहने वाली मस्ती और अनासक्ति की समानता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में शिरीष की गर्मी में खेलने की विशेषता और कबीर की निर्भीक फक्कड़ता, दोनों अवश्य लिखें।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ से उद्धृत कथन ‘दासता केवल कानूनी पराधीनता ही नहीं है’ – का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वतंत्रता का अर्थ केवल कानून की दृष्टि से स्वतंत्र होना नहीं, अपनी क्षमता और इच्छा के अनुसार जीवन तथा व्यवसाय चुन पाना भी है।
- जाति-प्रथा जन्म के आधार पर पेशा निर्धारित करके व्यक्ति की रुचि और योग्यता को दबाती है; यह सामाजिक पराधीनता है।

चरण 1: कथन का सामाजिक संदर्भ समझें डॉ. आंबेडकर दासता का व्यापक अर्थ बताते हैं। यदि कोई व्यक्ति कानूनी रूप से स्वतंत्र होते हुए भी सामाजिक व्यवस्था के कारण दूसरों द्वारा निर्धारित पेशा अपनाने को बाध्य हो, तो उसके जीवन का संचालन उसकी अपनी इच्छा से नहीं हो रहा है। जन्म के आधार पर थोपे गए व्यवसाय में भी दासता निहित है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर दासता का अर्थ केवल कानून द्वारा किसी का गुलाम होना नहीं है। जब समाज व्यक्ति को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनने नहीं देता और जन्म से निर्धारित काम करने को बाध्य करता है, तब यह सामाजिक दासता भी उसकी स्वतंत्रता छीनती है।

चरण 3: निष्कर्ष जन्म के आधार पर पेशा थोपना और अपनी इच्छा से काम चुनने न देना भी दासता का ही रूप है।

त्वरित सुझाव: कानूनी स्वतंत्रता के साथ व्यवसाय चुनने की वास्तविक स्वतंत्रता का अंतर स्पष्ट करें; जाति-प्रथा से उसका संबंध जोड़ें।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए’ - ‘बाजार दर्शन’ पाठ में यह वाक्य क्यों और किस संदर्भ में कहा गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पानी पीकर लू में जाने का उदाहरण सावधानी और आंतरिक तृप्ति का रूपक है; यहाँ बाजार का आकर्षण लू के समान प्रभावकारी है।
- अपनी जरूरत का स्पष्ट ज्ञान और मन का संतोष बाजार की चकाचौंध से बचाते हैं। खाली मन में अनावश्यक इच्छाएँ जल्दी उत्पन्न होती हैं।

चरण 1: कथन का प्रसंग पहचानें जैनद्र कुमार बाजार के जादू की चर्चा करते हुए बताते हैं कि उसकी चकाचौंध मनुष्य के भीतर नई-नई इच्छाएँ जगा देती है। खाली मन लेकर बाजार जाने वाला हर वस्तु को उपयोगी समझ सकता है। इसलिए लेखक बाजार जाने से पहले अपनी वास्तविक आवश्यकता का निश्चय करने की सलाह देते हैं।

चरण 2: उदाहरण का आशय समझें लू में निकलने से पहले पानी पीना शरीर को उसके दुष्प्रभाव से बचाने की तैयारी है। इसी प्रकार जरूरत की पहचान और संतोष से भरा मन बाजार के मोह से रक्षा करता है। इसका अर्थ बाजार का त्याग करना नहीं, बल्कि विवेकपूर्वक खरीदारी करना है। धन होना मात्र इस विवेक का स्थान नहीं ले सकता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक ने यह वाक्य बाजार के जादू से बचने के संदर्भ में कहा है। जैसे पानी पीकर निकलने से लू का प्रभाव घटता है, वैसे ही अपनी आवश्यकता जानकर और मन को संतुष्ट रखकर बाजार जाना चाहिए। खाली मन बाजार की चकाचौंध में अनावश्यक वस्तुएँ खरीदने लगता है। यह उदाहरण जरूरत के अनुसार विवेकपूर्ण खरीदारी की सलाह देता है।

चरण 4: निष्कर्ष पानी पीकर लू में जाने का उदाहरण बाजार में जाने से पहले जरूरत स्पष्ट रखने और मन को संतुष्ट रखने की सीख देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बाजार के जादू का प्रसंग दें, फिर पानी की तृप्ति को मन के संतोष तथा स्पष्ट आवश्यकता से जोड़ें।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

अनावृष्टि दूर करने के लिए गाँव के बच्चों और गाँव वालों द्वारा किए गए उपायों को आप कितना उचित मानते हैं ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के संदर्भ में तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न लोकविश्वास, सामुदायिक सहयोग और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संतुलित मूल्यांकन पर आधारित है।
- पाठ में इंदर सेना का पानी माँगना तथा जीजी का दान और त्याग का तर्क दो प्रमुख संदर्भ हैं।

चरण 1: पाठ के प्रसंग का विवेचन अनावृष्टि से व्याकुल गाँव में बच्चों की इंदर सेना मेघों से पानी माँगती हुई घर-घर जाती है। गाँव वाले उन पर पानी डालते और उन्हें खाने की वस्तुएँ देते हैं। लेखक पानी की कमी में इस तरह पानी बहाने पर आपत्ति करता है। दूसरी ओर जीजी इसे त्याग, दान और सामूहिक कल्याण की भावना से जोड़ती हैं। अतः विवेचन में लोकभावना और उपाय की वास्तविक उपयोगिता का अंतर समझना आवश्यक है। जीजी के तर्क का आशय यह है कि समाज में पाने से पहले कुछ देने की तत्परता होनी चाहिए। किंतु इस नैतिक शिक्षा को वर्षा का वैज्ञानिक कारण नहीं मानना चाहिए। संतुलित उत्तर परंपरा के मानवीय पक्ष को स्वीकार करता है और संसाधन के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल देता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर अनावृष्टि दूर करने के लिए बच्चों की इंदर सेना पर गाँव वालों का पानी डालना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं है; इससे वर्षा होने का प्रमाण नहीं मिलता और दुर्लभ जल व्यर्थ जाता है। किंतु इन उपायों में सामूहिकता, लोकविश्वास और परोपकार की भावना है। जीजी का त्याग-संदेश मूल्यवान है। इसलिए सहयोग बनाए रखते हुए जल-संरक्षण और वैज्ञानिक उपाय अपनाने चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लोकपरंपरा की सहयोग-भावना सराहनीय है, किंतु अनावृष्टि का व्यावहारिक समाधान जल-संरक्षण और वैज्ञानिक प्रयास हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में जीजी की त्याग-भावना का सम्मान करते हुए पानी की बर्बादी पर तर्कपूर्ण आपत्ति भी लिखें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :

शिरीष के माध्यम से लेखक ने, 'कालजयी अवधूत की भाँति विपरीत परिस्थितियों में भी अविचल खड़े रहने की प्रेरणा दी है।' पुष्टि कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में जिजीविषा, अनासक्ति और सहज मस्ती का प्रतीक है।
- अवधूत का आशय सांसारिक मोह और सुख-दुःख से ऊपर रहने वाले मुक्त स्वभाव के साधक से है।

चरण 1: शिरीष और अवधूत की समानता लेखक शिरीष के स्वभाव को देखकर उसे कालजयी अवधूत कहता है। कठोर गर्मी, लू और वातावरण की शुष्कता भी उसकी सरसता को समाप्त नहीं करती। वह कोमल फूलों के माध्यम से सौंदर्य बिखेरता रहता है। यहाँ अविचल रहने का अर्थ केवल खड़े रहना नहीं, बल्कि संकट में भी जीवन की रचनात्मकता और उल्लास बनाए रखना है। अवधूत की भाँति उसकी मस्ती बाहरी सुविधा पर निर्भर नहीं है। शिरीष की कोमलता दुर्बलता का चिह्न नहीं है; कठोर परिवेश में भी उसकी सरसता बनी रहती है।

इसी विरोध से लेखक का जीवन-संदेश अधिक स्पष्ट होता है। मनुष्य भी परिस्थितियों को दोष देकर निष्क्रिय होने के बजाय अपने भीतर की शक्ति और सहज आनंद सुरक्षित रख सकता है। यह तुलना पलायन नहीं, जीवन के प्रति सक्रिय आस्था व्यक्त करती है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर शिरीष भीषण गर्मी, लू और सूखे में भी कोमल फूलों से लदा रहता है। प्रतिकूल वातावरण उसकी मस्ती और सरसता नहीं छीन पाता। वह अवधूत की भाँति सुख-दुःख से निर्लिप्त रहकर जीवन का रस बाँटता है। लेखक उससे संकट में धैर्य, अनासक्ति और जिजीविषा बनाए रखने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी अविचल रहने का आदर्श है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष अपनी अनासक्त मस्ती, सहनशीलता और निरंतर सरसता से कालजयी अवधूत का आदर्श साकार करता है।

त्वरित सुझाव: अवधूत की तुलना स्पष्ट करने के लिए लू में भी फूलना और संकट में भी मस्ती बनाए रखना जोड़ें।

11. भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती; पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये, भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अंतरहित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस संबंध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए संभव नहीं। यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है ! उसके जीवन का परम कर्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है – जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर-उधर करके बताना, क्या झूठ है। इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो भगवान जी कैसे प्रसन्न रख सकते और संसार को कैसे चला सकते !

[5 अंक]

11(i). गद्यांश में 'नरो वा कुंजरो वा' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है ?

[1 अंक]

- (A) महाभारत के प्रसंग से अवगत कराने के लिए
- (B) भक्तिन को युधिष्ठिर के समकक्ष रखने के लिए
- (C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए
- (D) भक्तिन को युधिष्ठिर से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

सही उत्तर: (C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- संदर्भगत अर्थ पहचानने के लिए उद्धरण को उसके आसपास के चरित्र-वर्णन से जोड़ना चाहिए।
- किसी पौराणिक उल्लेख का उद्देश्य केवल कथा बताना नहीं, पात्र का स्वभाव उजागर करना भी हो सकता है।

चरण 1: उद्धरण का प्रसंग समझना लेखिका पहले कहती हैं कि भक्तिन सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती, फिर जोड़ती हैं कि वह 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। यह तुलना सत्य और असत्य के प्रति उसके अपने ढंग को दिखाती है। वह अपने व्यवहार को छिपाने के बजाय तर्क देकर उचित ठहराती है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के उद्देश्य को सही बताता है। (A) अनुचित है, क्योंकि यहाँ महाभारत की कथा सुनाना उद्देश्य नहीं है। (B) में युधिष्ठिर के समकक्ष और (D) में उनसे श्रेष्ठ सिद्ध करने की बात है; गद्यांश में ऐसी तुलना का निर्णय नहीं दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का अर्थ तय करते समय देखें कि लेखक उसके द्वारा किस पात्र के स्वभाव का परिचय दे रहा है।

11(ii). भक्तिन घर में पड़े पैसों को मटकी में छिपाकर किस उद्देश्य से रखती थी ?

[1 अंक]

- (A) पैसों को सँभालकर रखने
 - (B) अन्य सेवकों की दृष्टि से बचाने
 - (C) आपातकाल में काम आने
 - (D) स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझने
- सही उत्तर:** (A) पैसों को सँभालकर रखने

हल:

अवधारणा:

- पठित गद्यांश में किसी कार्य का उद्देश्य बताने के लिए उसी कार्य से जुड़ी स्पष्ट पंक्ति खोजनी चाहिए।
- उत्तर अनुमानित परिस्थिति से नहीं, गद्यांश में व्यक्त कारण से तय होता है।

चरण 1: निर्णायक वाक्य पहचानना भक्तिन पैसे रखने के संबंध में तर्क देती है कि यह उसका अपना घर है और 'पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया।' उसके अनुसार यह चोरी नहीं, घर की वस्तु सँभालना है। प्रश्न में इसी कार्य का उद्देश्य पूछा गया है।

चरण 2: विकल्पों को पाठ से मिलाना (A) में पैसों को सँभालकर रखने का उद्देश्य सीधे गद्यांश से मेल खाता है। (B) में अन्य सेवकों से बचाने और (C) में आपातकाल की तैयारी का उल्लेख गद्यांश में नहीं है। (D) में अपने को श्रेष्ठ समझने का भाव भी पैसे रखने के कारण के रूप में नहीं दिया गया है। इसलिए अतिरिक्त अनुमान वाले विकल्प स्वीकार नहीं किए जा सकते।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है: पैसों को सँभालकर रखने।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य संबंधी प्रश्न में पात्र के अपने कथन को आधार बनाइए और पाठ में न दिए कारणों को हटाइए।

11(iii). 'थोड़ा बहुत झूठ बोलना' के समर्थन में भक्तिन अपना आदर्श किसे मानती थी ?

[1 अंक]

- (A) हरिश्चंद्र
 - (B) यमराज
 - (C) युधिष्ठिर
 - (D) महादेवी
- सही उत्तर:** (B) यमराज

हल:

अवधारणा:

- किसी नाम या संबोधन की पहचान उसके वाक्यगत संदर्भ से की जाती है।
- गद्यांश के अंत का धर्मराज महाराज वाला तर्क भक्तिन द्वारा अपने व्यवहार का औचित्य बताता है।

चरण 1: भक्तिन का समर्थन-तर्क पहचानना भक्तिन लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए अप्रिय बात बदलकर बताने को झूठ नहीं मानती। वह कहती है कि इतना झूठ तो 'धर्मराज महाराज' में भी होगा, अन्यथा वे भगवान को प्रसन्न रखकर संसार कैसे चलाएँगे। यहाँ धर्मराज महाराज का आशय यमराज से है।

चरण 2: अन्य नामों से अंतर करना अतः (B) यमराज उपयुक्त है। (A) हरिश्चंद्र पूर्ण सत्यवादिता का उदाहरण हैं, थोड़े झूठ के समर्थन का नहीं। (C) युधिष्ठिर से संबंधित पूर्ववर्ती उल्लेख को अंतिम तर्क से नहीं मिलाना चाहिए। (D) महादेवी को भक्तिन प्रसन्न रखना चाहती है, किंतु इस तर्क में उन्हें अपना आदर्श नहीं बताती।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: यमराज।

त्वरित सुझाव: यहाँ धर्मराज महाराज का संदर्भ अंतिम वाक्य से पहचानें; उसे पूर्ववर्ती महाभारत वाले संकेत से न मिलाएँ।

11(iv). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा।

कारण : समय और परिस्थिति के अनुसार मूल तथ्यों में जोड़-घटाव करती थी।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
(B) कारण सही है किंतु कथन गलत है।
(C) कथन सही है किंतु कारण कथन की गलत व्याख्या करता है।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में पहले दोनों की सत्यता और फिर उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध जाँचना चाहिए।
- भक्तिन का चरित्र गुण-दोषों से बना है; लेखिका उसके तर्कपूर्ण आत्मसमर्थन को भी सामने रखती हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता गद्यांश का आरंभ है कि भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। इसलिए दिया गया कथन सही है। इसे लेखिका का भक्तिन के गुण-दोषों के संबंध में किया गया मूल्यांकन समझना चाहिए।

चरण 2: कारण की सत्यता भक्तिन लेखिका को क्रोध से बचाने के लिए अप्रिय बातों को बदलकर बताती है। अतः समय और परिस्थिति के अनुसार तथ्यों में जोड़-घटाव करने का कारण भी गद्यांश के अनुरूप है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध सत्य को अपनी सुविधा से बदलना उसके दोषपूर्ण व्यवहार का उदाहरण है और उसे पूरी तरह अच्छा कहने में कठिनाई का कारण बनता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) सत्य कथन को गलत कहते हैं; (C) सही व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है: कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

तुरित सुझाव: दोनों वाक्य सही मिलने पर भी रुकें नहीं; जाँचें कि कारण कथन के मूल्यांकन का आधार बनता है या नहीं।

11(v). महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन क्या करती थी ?

[1 अंक]

- (A) खूब मन लगाकर काम करती थी
(B) बातों को ढालकर बताती थी
(C) उनके सामने नहीं आती थी
(D) बातों को स्पष्ट रूप से बताती थी

सही उत्तर: (B) बातों को ढालकर बताती थी

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग-बोध में पात्र के व्यवहार का कारण गद्यांश के स्पष्ट कथन से पहचाना जाता है।
- भक्तिन लेखिका को प्रसन्न रखना अपना परम कर्तव्य मानती है और अप्रिय बात का रूप बदल देती है।

चरण 1: गद्यांश में निर्णायक कथन पहचानना गद्यांश में कहा गया है कि जिस बात से महादेवी जी को क्रोध आ सकता है, भक्तिन उसे बदलकर और इधर-उधर करके बताती है। इसलिए उसका उपाय बात को ढालकर प्रस्तुत करना है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (B) इसी व्यवहार को व्यक्त करता है। (A) में मन लगाकर काम करने की बात है, पर क्रोध से बचने का यह उपाय यहाँ नहीं बताया गया। (C) गलत है, क्योंकि सामने न आने का उल्लेख नहीं है। (D) भी गलत है, क्योंकि बात स्पष्ट रूप में कहने के बजाय वह उसका रूप बदलती है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए बातों को ढालकर बताती थी। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: क्रोध से बचने का उपाय पूछे जाने पर गद्यांश में 'बदलकर इधर-उधर करके बताना' वाला वाक्य खोजें।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

अपनी ही शादी की पार्टी में से यशोधर बाबू पूजा के बहाने क्यों उठकर चले गए ? उनका मेहमानों के बीच से इस तरह उठकर चले जाना, आपकी दृष्टि में कहाँ तक उचित है ? 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के संदर्भ में तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू का पारंपरिक जीवन-बोध परिवार की नई जीवनशैली से टकराता है।
- आलोचनात्मक उत्तर में पात्र के व्यवहार का कारण समझाते हुए उसके औचित्य पर संतुलित निर्णय देना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और उत्तर की रूपरेखा प्रश्न के दोनों पक्ष आवश्यक हैं। पहले पार्टी से यशोधर बाबू की असहजता का कारण बताना है और फिर मेहमानों के बीच से उठने की उचितता पर अपना तर्क देना है। कहानी में विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाने की आधुनिक रीति और बच्चों का रहन-सहन उनके संस्कारों से मेल नहीं खाते। उनकी दृष्टि में अपनापन और सादगी महत्वपूर्ण हैं, जबकि आयोजन में उन्हें अपनी रुचि के अनुकूल आत्मीय वातावरण नहीं मिलता। पार्टी में उनका अकेलापन केवल उत्सव की रीति का विरोध नहीं, बदलते पारिवारिक संबंधों से उपजी मनःस्थिति भी प्रकट करता है। उनके प्रति सहानुभूति रखते हुए अतिथि-सत्कार की मर्यादा का ध्यान रखना जरूरी है। उत्तर में केवल उन्हें रूढ़िवादी कहना या केवल बच्चों को दोष देना पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में उत्तर यशोधर बाबू अपनी शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित पार्टी के आधुनिक तौर-तरीकों से असहज थे। उन्हें यह आयोजन अपनी परंपरागत जीवन-दृष्टि के अनुकूल नहीं लगा। बच्चों की जीवनशैली और विचारों से दूरी के कारण वे अपने ही घर में अलग-थलग अनुभव कर रहे थे। इसलिए पूजा के बहाने वहाँ से उठ गए। उनका संकोच समझ में आता है, किंतु मेहमानों को छोड़कर जाना पूरी तरह उचित नहीं था। परिवार ने उत्सव उनके लिए आयोजित किया था; ऐसे में अतिथियों का सम्मान भी उनका दायित्व था। उन्हें आत्मीयता से शामिल होकर बाद में अपनी असहमति परिवार के सामने रखनी चाहिए थी।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू का उठ जाना पीढ़ियों के बीच बढ़ती मानसिक दूरी का संकेत है। उनकी असहजता स्वाभाविक थी, पर अवसर पर मेहमानों के साथ बने रहना और बाद में परिवार से संवाद करना अधिक उचित होता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले 'क्यों गए' का कारण दें, फिर 'कितना उचित' पर अपना निर्णय और उसका स्पष्ट तर्क लिखें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

'जूझ' निम्न-मध्यवर्गीय ग्रामीण समाज और जीवन से लड़ते-जूझते किसानों-मज़दूरों के संघर्ष की कहानी है। सोदाहरण इस कथन की पुष्टि कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में ग्रामीण निम्न-मध्यवर्ग के जीवन, खेती की कठिनाइयों और शिक्षा पाने के संघर्ष का चित्रण है।
- कथन की पुष्टि के लिए सामान्य गरीबी का वर्णन पर्याप्त नहीं है; लेखक के खेत में काम करने और पढ़ाई जारी रखने के वास्तविक प्रसंग जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का सामाजिक आधार समझिए परिवार की आजीविका खेती पर निर्भर है। आर्थिक अभाव और कठोर श्रम के बीच बच्चों की पढ़ाई भी उपयोगी श्रम की हानि समझी जाती है। लेखक का दादा कहलाने वाला पिता उसे स्कूल से हटाकर खेती में लगा देता

है। इससे स्पष्ट है कि जीविका की तत्काल आवश्यकता ग्रामीण बालक की शिक्षा और स्वतंत्र आकांक्षा को दबाती है। यहाँ संघर्ष केवल व्यक्ति का नहीं, उसके सामाजिक परिवेश का भी है। पढ़ाई जारी रखने की इच्छा के साथ लेखक को घर के विरोध का सामना करना पड़ता है। दत्ता जी राव का हस्तक्षेप उसके लिए मार्ग खोलता है, पर नियमित श्रम की बाध्यता बनी रहती है। अतः सफलता का आधार सुविधाएँ नहीं, उसका धैर्य और सीखने की ललक है।

चरण 2: उदाहरण चुनकर लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए ‘जूझ’ ग्रामीण निम्न-मध्यवर्ग के अभाव, कठोर श्रम और आगे बढ़ने की आकांक्षा का चित्र प्रस्तुत करता है। आनंद का पिता उसे विद्यालय से हटाकर खेती में लगा देता है। शिक्षा पाने के लिए आनंद माँ की सहायता से दत्ता जी राव तक अपनी बात पहुँचाता है। उनके हस्तक्षेप पर पढ़ाई की अनुमति मिलती है, किंतु खेत का काम छोड़ने की छूट नहीं मिलती। वह विद्यालय जाने से पहले और लौटने पर काम करता है। पशु चराते समय भी कविताएँ गुनगुनाता और रचता है। उसकी लगन बताती है कि किसान-मजदूर परिवार का बालक अभाव और बाधाओं से जूझकर अपना भविष्य बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार आनंद का श्रम और अध्ययन साथ-साथ चलना कथन को प्रमाणित करता है। उसकी कहानी ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों के बीच शिक्षा और आत्मविकास के लिए निरंतर संघर्ष की कहानी बन जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खेती, विद्यालय में वापसी और काम के बीच काव्याभ्यास के प्रसंग जोड़ें; इससे कथन की पुष्टि ठोस उदाहरणों के साथ होगी।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए :

‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का ‘अतीत में दबे पाँव’ मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता की नगर-योजना, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक जीवन का परिचय देता है।
- उत्तर में स्थापत्य की विशेषताओं के साथ लेखक का प्रमुख निष्कर्ष भी आवश्यक है: यहाँ भव्य राजसत्ता के प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक जीवन और सुरुचि का महत्त्व दिखाई देता है।

चरण 1: अवशेषों से सभ्यता की विशेषताएँ पहचानिए सड़कों, गलियों, पकी ईंटों के मकानों, कुओं और जल-निकासी की व्यवस्था से योजनाबद्ध शहरी जीवन का पता चलता है। महाकुंड का निर्माण सामूहिक उपयोग और उत्कृष्ट स्थापत्य-कौशल का प्रमाण है। मूर्तियाँ, मुहरें और अन्य कलावस्तुएँ कलात्मक रुचि तथा शिल्प के विकास को दिखाती हैं। लेखक विशाल राजमहलों और शासकीय वैभव के चिह्नों की अपेक्षाकृत अनुपस्थिति पर ध्यान देता है। इससे वह इस सभ्यता को नागरिक व्यवस्था तथा संस्कृति से जोड़ता है। उत्तर में इन संकेतों को पाठ के विवेचन की तरह प्रस्तुत करना चाहिए; इनके आधार पर सभी ऐतिहासिक प्रश्नों के अंतिम निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिए।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में समेकित उत्तर दीजिए ‘अतीत में दबे पाँव’ के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता विकसित नगर-योजना और सुरुचिपूर्ण नागरिक जीवन वाली सभ्यता थी। मोहनजोदड़ो की व्यवस्थित सड़कें, गलियाँ, पकी ईंटों के मकान, कुएँ और ढकी नालियाँ स्वच्छता तथा सामूहिक सुविधा के प्रति सजगता दर्शाती हैं। विशाल महाकुंड उत्कृष्ट निर्माण-कौशल का उदाहरण है। मुहरें, मूर्तियाँ और शिल्प-सामग्री कला तथा सौंदर्यबोध का परिचय देती हैं। यहाँ राजमहलों, भव्य मंदिरों और सत्ता के प्रदर्शन की अपेक्षा साधारण नागरिकों की सुविधाएँ अधिक प्रमुख दिखाई देती हैं। इसलिए लेखक इसे राजपोषित वैभव से अधिक समाजपोषित संस्कृति मानता है। सादगी और सुव्यवस्था इसका विशेष आकर्षण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता की पहचान सुव्यवस्थित नगरों, स्वच्छता, उन्नत शिल्प और नागरिक संस्कृति के मेल से बनती है। पाठ इन अवशेषों में मनुष्य की जीवन-दृष्टि और विकसित सामाजिक समझ खोजता है।

त्वरित सुझाव: केवल वस्तुओं की सूची न दें; नालियों को स्वच्छता से, महाकुंड को निर्माण-कौशल से और कलावस्तुओं को सुरुचि से जोड़कर लिखें।